thearyasamaj.org

[redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

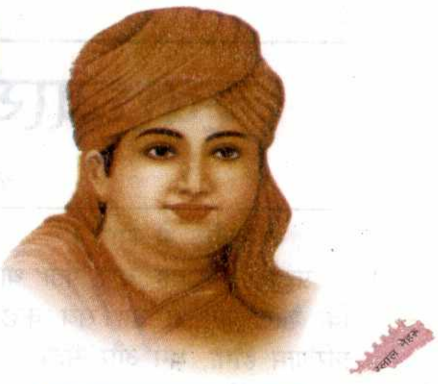

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक :34
सृष्टि संवत् 1960853115
30 नवम्बर 2014
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–71, अंक : 34, 27/30 नवम्बर 2014 तदनुसार 16 मार्गशीर्ष सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

विद्वान भगवान का ध्यान करते हैं

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

यस्तस्तम्भ सहसा वि ज्मो अन्तान्बृहस्पतिस्त्रिषधस्थो रवेण।
तं प्रत्नास ऋषयो दीध्यानाः पुरो विप्रा दधिरे मन्द्रजिह्वम्।।

-ऋ. 4/50/1

शब्दार्थ- यः =जिस **त्रिषधस्थः** = त्रिलोकी में रहने वाले **बृहस्पतिः** = महान लोक- लोकान्तरों के पालक भगवान ने **सहसा** = शक्ति तथा **रवेण** = आदेश से **ज्मः** = संसार के **अन्तान्**= सिरों को **वि**= विशेष रूप से **तस्तम्भ**= थाम रखा है **प्रत्नासः** = पुराने, सनातन, व्यवहारकुशल **ऋषयः**= यथार्थदर्शी **विप्राः**= मेधावी, ज्ञानी **दीध्यानाः** = ध्यान करते हुए **तम्** = उसे **मन्द्रजिह्वम्**= मस्ती के उपदेशक को **पुरः**= आगे **दधिरे** = धरते हैं, अर्थात उसका ध्यान करते हैं।

व्याख्या= मनुष्य का आदर्श बहुत ऊंचा होना चाहिये। छोटे आदर्श वाले मनुष्य छोटे ही होते हैं। वेद में उपेदश आता है।

उत्क्रामातः पुरुषः हे मनुष्य ! इस अवस्था से ऊपर उठ अर्थात् वर्तमान अवस्था पर ही संतोष करके नहीं रहना चाहिये, वरन् और अधिक उन्नति के लिये चेष्टा करनी चाहिये। अल्प में सुख नहीं हैं, अतः बड़ा बनने का, बड़ाई प्राप्त करने का यत्न करना चाहिये। महात्मा सनत्कुमार ने नारद को ठीक ही बताया था-

यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति। -छः 7/23/1

जो सबमें बड़ा है, वही सुख है, थोड़े में तो सुख है ही नहीं।

आओ ! महान का अनुसंधान करें। कोई छोटा सा मिट्टी का ढेला हाथ में ले-लो, फिर हाथ से छोड़ दो। क्या वह वहां रह जाएगा? नहीं, नीचे जाएगा। क्यों? आकर्षण-शक्ति इसकी व्याख्या नहीं। जड़ पृथिवी आदि में यह सामर्थ्य कहां, यह जान कहां? संसार में व्यवस्था तथा नियम सूचित कर रहे हैं कि कोई ऐसा नियामक हैं जो इस सारे ब्रह्माण्ड का संचालन कर रहा है और जिसमें सबको वश में रखने का सामर्थ्य है जिसे इस सब का यथार्थ ज्ञान भी है अर्थात् वह सर्ववशी, सर्वव्यापक तथा सर्वज्ञ है। मंत्र के पूर्वार्ध में उस महान का बखान् है-

यस्तस्तम्भ सहसा विज्मो अन्तान् बृहस्पतिस्त्रिषधस्थो रवेण।

जिस त्रिषधस्थ बृहस्पति ने शक्ति तथा आदेश से संसार के सिरों को विशेष रूप से थाम रखा है।

बृहस्पति-सबसे बड़े रक्षक ने लोकों के सिरों को थाम रखा है, अर्थात् लोकों के अन्तों तक उसकी पहुंच है। कैसे पहुंच है? वह **त्रिषधस्थः**=तीनों लोकों में एक साथ रहता है, अर्थात् वह सदा सर्वव्यापक है, कारण और कार्य दोनों में वह एक समान विराजमान है। इससे भगवान एक देशी नहीं वरन् सर्वदेशी है, यह सिद्ध हुआ। वह एक कार्य अपने सहज सामर्थ्य से कर रहा है। वह मन्द्रजिह्व-मधुर उपदेश है, उसके उपदेश मस्ती देते हैं। उपदेश ज्ञान के बिना नहीं हो सकता। सर्वत्र रहने वाले का ज्ञान भी सर्वव्यापक होना चाहिये।

सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् भगवान से अधिक महान कौन है? अतः सुखाभिलाषी ऋषि उसी का ध्यान करते हैं-

तं प्रत्नासः ऋषयो दीध्यानाः पुरो विप्रा दधिरे मन्द्रजिह्वम्।

इसका एक भाव और भी है। पुरोधान= आगे धरने का एक अर्थ है-नेता बनाना, आदर्श बनाना। आदर्श जिसे बनाओ, वह मन्द्रजिह्व= मधुरवाणी-मीठी जबान वाला हो। सचमुच भगवान् के उपदेश में कहीं भी कटुपन नहीं हैं। चारों वेद पढ़ जाइए, मिठास-ही-मिठास वहां मिलेगी। आलोचकों का कहना है, वेद के युद्ध सूक्तों में भी एक मिठास है, रस है।

क्या प्रत्येक मनुष्य भगवान का ध्यान कर सकता है? ध्यान करने वाले में दो गुण होने चाहिये- एक ऋषित्व, दूसरा विप्रत्व। ऋषि का अर्थ है-ऋषिर्दर्शनात् जिनको पदार्थों का यथार्थ ज्ञान हो गया है जिसने प्रकृति के सत्त्व, रजस् और तमस् के बन्धन करने के गुण को देख लिया है, वह कैसे इस पाश में फंसेगा? किन्तु होता यह है कि मनुष्य बार-बार भूल जाता है। प्रकृति तथा प्रकृतिजन्य संसार में इतनी मोहकता, इतना आकर्षण है कि प्राकृतिक विषयों के सामने आने पर मनुष्य को सारा ज्ञान भूल जाता है, अतः केवल एक बार जान लेना ही पर्याप्त नहीं है, वरन् उस ज्ञान को धारण करने का गुण भी होना चाहिये। उस गुण का नाम है विप्रत्व। विप्र कहते हैं मेधावी को, मेधा-बुद्धिवाले को। मेधा का अर्थ है धारणावती बुद्धि। इसी कारण वेद (32/14) में अनेक स्थानों पर मेधा-बुद्धि-प्राप्ति के लिये प्रार्थना है-

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।

-यजु. 32/14

जिस मेधा-बुद्धि का सेवन निष्काम विद्वान तथा सकाम ज्ञानी करते हैं, हे उन्नतिदायक प्रभो! उस मेधा-बुद्धि से युक्त करके मुझे भी मेधावी कीजिए। मेधा के बिना संसार का कार्य भी नहीं चल सकता। सच्चे मेधावी की पहचान ही यह है कि वह भगवान का ध्यान करता हो।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

thearyasamaj.org

स्वाध्याय के लाभ

-ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

प्रह्लाद को यह क्या पता था कि शीलत्याग से यह सब कुछ परिणाम होगा, धर्म और सत्य भी छोड़ जाएंगे। इस पर पश्चाताप करने ही लगे थे कि देखते क्या हैं कि उनके शरीर से मानो प्राणों को कोई खींच रहा है। मानो वे अभी निष्प्राण हो जाएंगे। पता चला कि वृत्त नाम का तत्व मूर्त रूप धारण करके निकल गया। प्रह्लाद ने पीछा किया और कहा, "महाभाग! तुम तो मेरा त्याग न करो। मेरा मरण हो जाएगा। जिसका वृत्त चला गया, उसका सब कुछ चला जाता है। वृत्त से मरा हुआ व्यक्ति मरा ही समझा जाता है-**अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः** प्रह्लाद रो दिया और बोला, "रूक जाओ, मेरा परित्याग न करो। वृत्त ने झटका दिया, यह जा और वह जा। प्रह्लाद को केवल यह सुनाई दिया, "राजन्! मैं वहीं जा रहा हूं, जहां शील, धर्म और सत्य गए हैं।"

अभी यह बात पूरी भी न हो पाई थी कि देखते क्या हैं, उनके शरीर से बल निकलकर वृत्त के पीछे हो लिया। प्रह्लाद चिन्तित थे कि यह क्या हुआ ? मैं क्या कर बैठा ? इतने ही में एक अत्यन्त रूपवती देवी प्रह्लाद के शरीर से निकलकर अलग खड़ी हो गयी, और प्रह्लाद कान्तिहीन और श्रीहीन हो गए। उसे जाते देख प्रह्लाद ने सिर धुन लिया, बहुत पैर पटके और पुकार-पुकार कर कहने लगे, "तुमने मुझे क्यों त्याग दिया ?" तो एक ही ध्वनि सुनाई दी, "महाभाग प्रह्लाद! मैंने तुम्हारा वरण इसलिए किया था कि तुममें शील था, धर्म था, सत्य था और वृत्त प्रतिष्ठित था। अब जब तुमने उन सबका परित्याग कर दिया है तो मैं क्या कर सकती हूं ? मैं भी वहीं जाऊंगी।" यह कहकर उसने तत्काल इन्द्र के गले में माला पहना दी और उनका वरण कर लिया।

जिस शील के उठ जाने से धर्म, सत्य, वृत्त और श्री ने प्रह्लाद को त्याग दिया और जिस शील के जम जाने से धर्म, सत्य, वृत्त और श्री ने इन्द्र का वरण किया, वह शील और वृत्त जिसके महाफल हैं ऐसे "सुनना" धर्म का परित्याग करना कितना अपराध है। इसलिए नारद का यह महावाक्य स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने योग्य है-"शील-वृत्तफलं श्रुतम्।"

सुनने का कितना महत्त्व है। इसलिए महर्षि ने तृतीय उद्देश्य में जहां वेदों का पढ़ना, पढ़ाना, सुनाना को परमधर्म बताया है, वहां सुनने को भी परमधर्म बताया। शेष धर्मत्रय का फल होगा। यह हम स्वाध्याय-महिमा में दिखा चुके हैं, यहां सुनने रूप परमधर्म का क्या फल है, यह दिखाना ही अभीष्ट था। सुनने से व्यक्ति शील और वृत्तवान् हो जाता है। वह शील कितने प्रकार का होता है यह भी दिखाते हैं।

हारीतस्मृति में हारीत लिखते हैं, **"तदाह हारीतः। शीलं ब्रह्मण्यतादि रूपम्, ब्रह्मण्यता, देवपितृभक्तता, सौम्यता, अपरोपतापिता, अनसूयता, मृदुता, अपारूष्यम्, मित्रता, प्रियवादित्वम्, कृतज्ञता, शरण्यता, कारुण्यं, प्रशान्तिश्चेति त्रयोदशविधशीलम्"** यह तेरह प्रकार का शील है।

ब्रह्मण्यता-शीलों में प्रथम ब्रह्मण्यता कहलाता है। शीलवान् व्यक्ति की पहचान है कि वह पवित्र ज्ञान के लिए प्रयत्नशील हो कि उसने आज कौन सा नया ज्ञान अर्जित किया है, उसके ज्ञान में नयी वृद्धि हुई, उसने अन्यों के ज्ञान में वृद्धि की।

ब्रह्मण्यता का एक आशय यह है कि वह ब्राह्मणों के प्रति मैत्रीभाव रखे। उनसे अपने को सम्बन्धित रखे और उनके धर्म को आचरण में लाये। धार्मिक, सज्जन और महीपति बनने का प्रयत्न करे। साथ ही आस्तिक भाव रखे, सदैव परमात्मा के ध्यान और भक्ति में रहे।

देवपितृ-भक्तता-शीलयुक्त व्यक्ति की दूसरी पहचान है कि देवों और पितरों के प्रति भक्तिभाव रखे। उनकी सेवा करे। भूलकर भी कोई ऐसा कार्य न करे जिससे बड़ों का अपमान या अनादर व्यक्त होता है। पूज्यों के प्रति अनुराग का नाम ही भक्ति है। उनकी आज्ञा-पालन में सदा तत्पर रहे। महान् विपत्ति ही क्यों न आ जाए, गुरूजनों और पूज्यों की आज्ञा का उल्लंघन कदापि न करे। देव और पितरों के तुल्य गुणों से युक्त हो। अपने को विद्वानों और गुरूजनों के लिए, माता-पिता तथा पितृतुल्य वानप्रस्थ तपस्वियों के लिए समर्पित कर दे। कदाचित् गुरूजन, हितार्थ ताड़ना भी करें अथवा आदेश देना तक छोड़ दें, तिस पर भी रोष न करे, अपितु उसे अपना दुर्भाग्य समझकर गुरूजनों के प्रति गदगद वाणी और 'साश्रुनेत्र' होकर प्रार्थी हो कि आपने अपनी कृपा का हाथ क्यों हटा लिया जो हम पुत्रों को आदेश नहीं देते ? पिता दशरथ द्वारा वनगमन का स्वयं आदेश न देने से राम अत्यन्त दुःखी हुए थे। यह स्मरण कर साश्रुनेत्र होकर गदगद वाणी से गुरू जी को याद किया करते थे। यही उनकी देव-भक्ति थी।

भक्त की पहचान सेवा है। जहां भक्त गुरूजनों की सेवा में अपना सौभाग्य समझे, वहां गुरूजन भी उसी से सेवा लेना चाहें। भक्त सेवा के लिए लालायित हो और जब गुरूजन सेवा लेना चाहें, तब समझे कि अब मेरा भाग्य उदय हुआ है। भक्त भक्ति से ही भाग्यशाली बनता है। भक्ति और भाग्य एक ही **"भज सेवायाम्"** धातु से बनते हैं। भक्त वह है जो सेवाशील है। **"सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः"** कहकर जिसे योगियों के लिए भी अगम्य बताया है, वह सेवाभाव किस सरलता से आ जाता है।

सौम्यता-हारीत ने सौम्यता को तृतीय शील कहा है। शीलवान् व्यक्ति की पहचान ही सौम्यता है। वह सोमवत् सबका प्यारा हो। उसे देखकर सभी की आंखें तृप्त हों, मन मुदित हो हृदय आह्लादित और शरीर पुलकित हो जाए, गुरूजन उसे आशीर्वाद देने के लिए आतुर हों। वह उनका प्यारा और दुलारा हो। जहां चला जाए अपने दर्शनमात्र से सबको आनन्दित कर दे। अत्यन्त विनयी और नम्र हो।

अपरोपतापिता-चतुर्थ शील का उल्लेख करते हुए कहा है, शीलवान् व्यक्ति की जो पहचान बताई है, जिससे वह महान् और सबका पूज्य बन सकता है, सर्वमित्र और अजातशत्रु बन जाता है, वह गुण है-अ-पर-उपतापिता-दूसरों को ताप न पहुंचाना। उपताप कहते हैं पीड़ा को, दुःख को, दर्द को, शोक को, संताप को। वह अपनों को तो क्या, जो पराए हैं, उनको भी पीड़ा दुख-संताप नहीं पहुंचाता, यह उसके स्वभाव में आ जाता है। परोपतापिता से सर्वथा दूर, सर्वथा अपरोपतापिता। इस शील के आते ही उसमें शील का अगला अंश अनसूयता स्वतः आ जाता है।

अनसूयता-वह शील है जो बड़े-बड़े व्यक्तियों में भी दुर्लभ है। असूयाशून्य व्यक्ति के दर्शन दुर्लभ ही होते हैं। असूया-दोष से ग्रसित व्यक्ति दूसरों के गुणों को कभी नहीं सहता। व्यर्थ ही दूसरों के गुणों में भी दोष का आविष्कार कर लेता है। उसे तो भ्रातृभक्त भरत के राम की पादुकाएं लाने में भी दोष नजर आता है कि जिन पादुकाओं से राम जंगल के कांटों से रक्षा कर सकते थे, वह भी छीन लाया और कांटे चुभाने के लिए उन्हें नग्नपाद कर आया। दूसरे के गुण में दोषारोपण करना एक चातुर्य समझता है।

दूसरे की गुण-समृद्धि को सहन न कर सकना असूया है। सदा दोष का वर्णन करते रहना, क्रोध करना, अन्यों की गुण-प्रशंसा सुनकर खिझना, डाह करना, ये सभी बातें असूया कहलाती हैं। शीलवान् व्यक्ति असूया को पास नहीं फटकने देता। सर्वथा अनसूया-गुण-युक्त व्यक्ति गुणियों के गुण को मारता नहीं, छोटे गुणों की भी स्तुति करता रहता है। **"परगुण-परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यम्"** को अपना स्वभाव बना लेता है। यदि किसी में दोष हो भी तो सुनी-सुनाई पर न कान देता है, न ध्यान देता है और न जुबान हिलाता है। इस शील को अनसूया कहते हैं।

"न गुणान् गुणिनो हन्ति स्तौति मन्दगुणानपि।
नान्यदोषेषु रमते सानसूया प्रकीर्तिता॥"

नारद की इस स्वर्णिम उक्ति में **"शील-वृत्त फलं श्रुतम्"** सुनने के दो महान् फल हैं शील और वृत्त। यह सुनना धर्म शूद्र का भी है। इससे जहां उसे ब्रह्मण्यता आदि शील प्राप्त होंगे, वहां अनसूया भी प्राप्त होगी। यह वह धर्म है, जिसे शूद्र को भी धारण करना है। इसके बिना तो यह शुश्रूषा नाम धर्म का पालन ही नहीं कर सकता। भगवान् मनु ने शुश्रूषा का विशेषण अनसूया लिखा है-**"एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्। एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया"** (मनु० १।९१)। इस शील के बिना अन्य शील नहीं आ सकते। जब अनसूया-युक्त शुश्रूता आती है, तभी ब्रह्मण्यता, भक्ति, सौम्यता, अपरोपतापिता, आदि पूर्वशीलों की सिद्धि और मृदुता आदि शीलों की भी उपलब्धि होती है। **(क्रमशः)**

thearyasamaj.org

सम्पादकीय......

स्वयंभू बाबा रामपाल का पतन धर्म के ठेकेदारों के लिए सबक

कबीरपंथी स्वयंभू बाबा रामपाल की गिरफ्तारी और उसका पतन पहली शिक्षा यह देता है कि बुराई के द्वारा, असत्य के द्वारा, अधर्म के द्वारा, अनैतिकता के द्वारा कोई कितनी ही तरक्की और उन्नति क्यों न कर ले लेकिन उसका पतन अवश्य होता है। असत्य के द्वारा, अधर्म के द्वारा मनुष्य जिस प्रकार शीघ्र उन्नति करता है उतनी ही शीघ्रता से उसका पतन भी होता है। बाबा रामपाल इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। कबरपंथी स्वामी रामदेवानन्द का शिष्य बनने के पश्चात 1995 में सरकारी नौकरी छोड़ने के बाद बाबा रामपाल ने जिस प्रकार उन्नति की है, बड़े-बड़े आश्रम बनाए, धर्म के नाम पर, आस्था के नाम पर लोगों को मूर्ख बनाकर अपना भक्त बनाया उसे देखकर लगता है कि रामपाल ने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा होगा कि एक दिन उसका इस तरह से पतन होगा। आश्रम के नाम पर प्रशासन को अंधेरे में रखकर किले का निर्माण कराया, आश्रम के अन्दर अपने रहने के लिए पाँच मंजिला कोठी बनाई, आश्रम के अन्दर तहखाने बनाए, अपनी निजी सेना तैयार की, सत्संग के नाम पर आश्रम की संदिग्ध गतिविधियों के रहस्य खुलने के बाद पता चलता है कि रामपाल के बाबा या संत बनने के पीछे कोई और ही मंशा थी। जिस तरह दूध में नहा कर उस दूध से खीर बना कर आम लोगों में वितरण करना एक घिनौना कार्य है। वह वास्तव में संत रामपाल नहीं बल्कि रावणपाल था।

बाबा रामपाल उस समय चर्चा में आया जब उसने 2006 में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के विरूद्ध असभ्य टिप्पणी की थी। उस टिप्पणी के विरूद्ध महर्षि दयानन्द के अनुयायियों ने संघर्ष किया। उसके बाद ही रामपाल के काले कारनामों से पर्दा उठना शुरू हुआ। आश्रम के नाम पर उसने जो काले धंधे शुरू किए थे, अनैतिक कार्य प्रारम्भ किए थे, वो कार्य जनता के सामने आने शुरू हुए। धर्म के नाम पर भोली भाली जनता को गुमराह किया और अपना अनुयायी बनाया। आश्रम का नाम सतलोक आश्रम रखकर उसके अन्दर असत्य के, अधर्म के, अनैतिकता के कार्य करता रहा। आखिर एक न एक दिन उसका सर्वनाश होना ही था क्योंकि पतन और उत्थान सिक्के के दो पहलू हैं। जो अधर्म के द्वारा, अनैतिक कार्यों के द्वारा, असत्य के द्वारा उत्थान करेगा उसका पतन अवश्य होगा। बाबा रामपाल की उन्नति भी ऐसी ही थी। उसने भी अधर्म का सहारा लेकर आश्रम के अन्दर अपने सैनिक तैयार किए, हथियार इकट्ठे किए, आस्था से खिलवाड़ करके अपने अनुयायियों की भीड़ इकट्ठा करके उन्हें कैद करके रखा और यह दिखाने का प्रयास किया कि मेरे पीछे इतने अनुयायी हैं। भोले भाले लोगों को जिनमें औरतें, बच्चे भी शामिल थे, उन्हें अपना हथियार बनाकर प्रशासन के उपर दबाव बनाने का प्रयास किया और गिरफ्तारी से बचता रहा। बीमारी का बहाना बनाकर रामपाल ने माननीय कोर्ट को गुमराह करने की बहुत कोशिश की परन्तु उसके पापों का घड़ा भर चुका था।

बाबा रामपाल के पतन का दूसरा सबक धर्म के उन ठेकेदारों के लिए है जो धर्म के नाम पर जनता को गुमराह करते हैं। ऐसे तथाकथित धर्म के ठेकेदारों और संतों का धर्म से कोई लेना-देना नहीं है, जिन्हें धर्म के लक्षणों का पता नहीं। वे समाज में धर्म के नाम पर लोगों को बाँटते हैं, उन्हें आपस में लड़ाते हैं और अपना स्वार्थ पूरा करते हैं। दूसरों को मोह माया छोड़ने का उपदेश करने वाले अपने लिए सब प्रकार के सुख के साधन इकट्ठा करते हैं। आश्रम के नाम पर, मठ के नाम पर लोगों से, प्रशासन से चन्दा लेकर आलीशान भवनों का निर्माण करते हैं और मठाधीश बनकर जनता का दोहन करते हैं। महर्षि मनु जी महाराज ने धर्म के दस लक्षण धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध बताए हैं। धर्म के नाम पर कलंक इन तथाकथित रामपाल जैसे संतों के अन्दर इनमें से कोई भी एक गुण नहीं दिखाई देता। धर्म का आधार सत्य है, सत्य ही धर्म है। एक दूसरे को आपस में लड़ाना, समाज के अन्दर ईर्ष्या, द्वेष की भावना पैदा करना धर्म नहीं सम्प्रदाय हैं। आज समाज के अन्दर ऐसे धर्म के ठेकेदारों की बाढ़ सी आ गई है। हर कोई अपने पंथ, सम्प्रदाय को फैलाना चाहते हैं। उसके लिए वे भोली भाली जनता को मूर्ख बनाकर अपने जाल में फंसा लेते हैं। बाबा रामपाल का पतन देखकर इन धर्म के ठेकेदारों को भी सबक लेना चाहिए कि बुराई जितनी तेजी से बढ़ती है, उतनी ही तेजी से उसका पतन भी हो जाता है और इसके लिए रामपाल से बढ़कर अच्छा उदाहरण और कोई नहीं हो सकता। एक जूनियर इंजीनियर की नौकरी से 1995 में त्यागपत्र देने के बाद इन 19-20 वर्षों में बाबा रामपाल के सफर की कहानी बड़ी रोचक है। इतने कम समय में अपने आपको धर्मगुरू के रूप में जनता में प्रचारित करना, सतलोक जैसे किलानुमा आश्रम का निर्माण करना, अपनी सुरक्षा के लिए निजी कमांडो तैयार करना रामपाल की विशेष उपलब्धि है। अगर रामपाल को उसके कर्मों के अनुसार कानून सजा देता है तो भविष्य में कोई बाबा रामपाल बनने का साहस नहीं करेगा।

बाबा रामपाल के पतन का तीसरा सबक उस जनता के लिए है जो इन धर्म के ठेकेदारों के जाल में फंसकर इन्हें सन्त, महात्मा और स्वामी की उपाधि देती है। अन्धश्रद्धा के रूप में इन तथाकथित बाबाओं के आगे अपना सर्वस्व अर्पण कर देती है। रामपाल का पतन लोगों को यह संदेश देता है कि आँखें मूंद कर किसी को भी अपना गुरू मत मानों और अन्धश्रद्धा में पड़कर समाज में बाबा रामपाल जैसे गुण्डों को पनपने का अवसर मत दो। जो पुलिस से बचने के लिए भोली भाली जनता, औरतों, बच्चों को अपना हथियार बना कर अपने आश्रम में कैद करता है, उससे बढ़कर दुष्ट, नीच और राक्षस कौन हो सकता है। अगर लोग रामपाल जैसे संत की कहानी से भी सबक नहीं लेते हैं तो समाज के अन्दर ऐसे ही और भी रामपाल पैदा होते रहेंगे। आज आम नागरिक को जागरूक होने की जरूरत है। बाबा रामपाल ने 2006 में जब महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के खिलाफ टिप्पणी की तो महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के अनुयायियों ने रामपाल के विरूद्ध इसलिए संघर्ष और विरोध नहीं किया कि उसने हमारे धर्म के खिलाफ टिप्पणी की है, बल्कि इसलिए विरोध किया कि सत्य और असत्य का निर्णय हो। जो वेद के मन्त्र में कवि का अर्थ कबीरदेव करता है उसकी विद्वता और ज्ञान का आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं। ऐसा व्यक्ति कैसे शास्त्रार्थ की चुनौती को स्वीकार करता जिसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर हो। महर्षि दयानन्द के खिलाफ टिप्पणी करने का लाभ यह हुआ कि आर्य समाज के अनुयायियों ने उसके विरूद्ध संघर्ष किया। उसके काले कारनामों को उजागर करना शुरू कर दिया। फलस्वरूप लोगों को रामपाल की विद्वता का पता चला और उसके काले कारनामों का पर्दाफाश होने से उसका असली चेहरा आज समाज के सामने आ गया। आर्य समाज के अनुयायी कभी पीछे नहीं हटे और उन्होंने रामपाल के खिलाफ अपना अभियान जारी रखा। उसी का यह परिणाम है कि संत और बाबा कहलाने वाले रामपाल की असलियत आज समाज के सामने है। आने वाले समय में रामपाल को संत रामपाल या बाबा रामपाल के रूप में नहीं अपितु रावणपाल के रूप में या राष्ट्रद्रोही के रूप में याद करेगी।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

thearyasamaj.org

सार्थक परामर्श

-ले० पंडित वेद प्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4E कैलाश नगर, फाजिल्का

प्राय: देखा गया है कि जब मनुष्य दीर्घावधि तक सर्विस करके सेवानिवृत्त होता है तो उसे मित्रजन अनेक प्रकार के उपहार भेंट करते हैं जो उसके प्रयोग योग्य होते हैं, जीवन में काम आते हैं। परन्तु थोड़ा सा इस पक्ष पर भी विचार करें, जब हमारे घर में कोई व्यक्ति अपनी जीवन यात्रा पूरी करके अपना शरीर त्याग देता है तब हम उसे कौन सा उपहार देते हैं ? घर से विदाई के समय मृतक शरीर पर केवल चद्दरें ही अर्पित करते हैं। परन्तु वे अर्पित की गई चद्दरें क्या उसके काम आएंगी ? नहीं न ? घर वालों के भी नहीं। भला उन्हें घर वापस कौन लाएगा ? कईयों का तो कहना है कि इनका भी आवागमन चक्र चलता रहता है, दुकान से श्मशान तथा श्मशान से दुकान। यह कथन कहां तक सत्य है ? यह स्वयं विचारें। अत: इस अवसर पर ऐसी वस्तुएं देनी चाहिए जो उस मृतक के सद्गतिकर्म/शवदाह में सहायक हों, काम आएं। यथा-घी, हवन-सामग्री, गुग्गल, गरीगोला, कपूर, चन्दन, लौंग, इलायची, आदि हव्य-पदार्थ।

विशेष- (क) प्रश्न-क्या चद्दरें चढ़ाएं ही नहीं ?

उत्तर-मेरे विचार से तीन चद्दरें चढ़ाई जानी चाहिए। एक पैतृक अर्थात् दादका पक्ष, दूसरी मातृक अर्थात् नानका पक्ष तीसरी ससुराल पक्ष। बस ये तीन ही पर्याप्त हैं।

(ख) शेष जिसकी जितनी सामर्थ्य हो, उतनी हवन-सामग्री ले जाए। चद्दरें चढ़ाने वाले व्यक्ति अथवा संस्थाएं उतने ही मूल्य का घी का पैकेट दे सकते हैं। शेष सौ, दो सौ ग्राम के हवन सामग्री के पैकेट, गरी गोला आदि ऊपर वर्णित वस्तुएं अपनी श्रद्धानुसार अर्पित कर सकते हैं। भार समझ कर नहीं। प्रत्येक के लिए यह अनिवार्य नहीं है। यह तो लेन देन की प्रीत है।

घी, सामग्री आदि पदार्थ शमशान भूमि में एकत्र हो जाने पर सिर की ओर से प्रारम्भ करके कपूर से अग्नि चारों ओर प्रज्वलित करें। कड़छियों से घी, सामग्री चारों ओर डालें। इससे अग्नि भली भांति प्रज्वलित होगी। अनेक सज्जन तथा अचारज घी, सामग्री आदि सारा ही शव पर डाल देते हैं। थोड़ा होने पर तो इसका कोई प्रभाव नहीं होता। परन्तु अधिक मात्रा में घी होने पर यदि सारा ही शव पर डाल दिया जाए तो वह पिघल कर नीचे चले जाने पर मिट्टी में मिल जाएगा। अत: अग्नि प्रज्जवलित होने पर ही घी, सामग्री आदि पदार्थ चिता पर अर्पित करना श्रेयस्कर है। क्योंकि इससे शवदाह अच्छी प्रकार होगा। अग्नि जलती रहेगी। हवन-सामग्री अधिक होने पर उसमें आवश्यकतानुसार दूध भी मिलाया जा सकता है जिससे सामग्री उड़े नहीं।

हवन का महत्त्व-शरीरान्त किसी न किसी रोग से होता है और रोगाणुओं की समाप्ति शवदाह से हो जाती है। परन्तु शरीर के अंग-त्वचा, अस्थि, मांस, मज्जा आदि के जलने से निकली दुर्गन्ध हव्य पदार्थों-हवन सामग्री, घी, चन्दन, गुग्गल आदि सुगन्धित पदार्थों से ही दूर होती है। वायु प्रदूषित नहीं होती। वातावरण शुद्ध होता है।

कई व्यक्तियों की ऐसी धारणा है कि अग्नि में घी, सामग्री डाल कर उसे नष्ट करना है, परन्तु ऐसी बात नहीं। अग्नि में अर्पित कोई भी पदार्थ व्यर्थ नहीं जाता अपितु सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में फैल कर उसे सुगन्धित बना देता है। जिसका वैज्ञानिकों ने भी समर्थन किया है। वस्तुत: अग्नि द्वारा पदार्थों का सूक्ष्मीकरण एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

अनेक सनातनधर्मी/पौराणिक बन्धु कह सकते हैं कि हवन का विस्तृत विधान ही नहीं है जो हम करें। इतने विस्तार से तो आर्य समाजी करते हैं। एतादृश सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि देखो, गरुड़ पुराण को तो मानते हो, उसमें भी संकेत किया गया है-

1. लोमभ्यस्त्वनुवाकेन होमं कुर्याद् यथाविधि॥ 10/7

''लोमभ्य:'' इस अनुवाक से यथाविधि हवन करना चाहिए।

2. प्रेते दत्त्वा पञ्चपिण्डान् हुतमादाय तं तृणै:॥ ग. पु. 10/24

प्रेत को पांच पिण्ड देकर पहले ''लोमभ्य: स्वाहा'' इस अनुवाक से होम की हुई अग्नि को तृणों में लेकर पुत्र अग्नि देवे।

3. असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा ज्वलतु पावक:॥ ग.पु. 10/58

तुम्हारे द्वारा स्वर्ग लोक जाने के लिए.........तुम प्रज्वलित हो।

''ओ३म् स्वर्गाय लोकाय स्वाहा॥'' आश्वलायन 4/3/25, 26

इस मन्त्र का महर्षि दयानन्द विरचित संस्कार विधि के 'अन्त्येष्टि संस्कार' में भी उल्लेख है। गरुड़ पुराण में यह संकेत मात्र किया गया है परन्तु वेदों में इसका विस्तृत उल्लेख है। प्रस्तुत प्रमाणों से पूर्णत: स्पष्ट है कि वेद मन्त्रों से विस्तृत हवन करना चाहिए। परन्तु कारण यह है कि न तो इस संकेत को पण्डित ही समझ सके और न ही यजमान। केवल गरुड़ पुराण का पाठ करके अथवा करवा कर ही कर्त्तव्य की इतिश्री समझ ली। फलस्वरूप अन्ध परम्परा का प्रचलन हो गया। यथार्थता की ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया।

पौराणिक अर्थात्-सनातनधर्मी अचारज (आचार्य) अन्त्येष्टि यज्ञ की पूर्ण विधि नहीं जानते, यद्यपि उन्हें जाननी चाहिए। अत: वे अग्रलिखित मन्त्र से ही तब तक आहुतियां दिलवाते रहें जब तक कि घी, हवन-सामग्री समाप्त न हो जाए। मन्त्र इस प्रकार है-

ओ३म् अन्तकाय मृत्यवे नम: स्वाहा॥ अथर्व० 8/1य1

सनातन धर्मी भी विधिपूर्वक हवन आर्य समाजी पण्डित से करवा सकते थे। हवन से पूर्व के पिण्डदानादि समस्त कार्य अचारज से करवाएं।

मैंने अनेक ऐसे अन्त्येष्टि संस्कार करवाएं हैं जहां परिवार न तो पूर्णत: आर्य समाजी हैं और न ही सनातनी। अत: वे दोनों प्रकार की विधियां करवाते हैं। अन्त्येष्टि संस्कार (हवन) वैदिक विधि से होता है, शेष सनातनी विधि से।

हवन हेतु पात्र-''आवश्यकता आविष्कार की जननी है।'' प्रस्तुत उक्ति के अनुसार जब हवन सामग्री, घी आदि अधिक मात्रा में एकत्र होगा तो पात्रों की आवश्यकता पड़ेगी। अत: घी, सामग्री आदि रखने के लिए ''शमशान प्रबन्धक समिति'' दो-तीन बड़े टोप/भगोना तथा चार बड़ी कड़छियां बांस के डंडे में तार से बंधी हुई उपलब्ध करवाएं। आवश्यकतानुसार इसमें वृद्धि भी की जा सकती है।

समाज-परिवार में सुधार की आवश्यकता-''संसार परिवर्तनशील है।'' अत: पारिवारिक और सामाजिक परम्पराओं में मौलिकता बनी रहने पर भी कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है। चाहे कोई भी जाति, बिरादरी, समाज क्यों न हो ? कुछ पुराना छोड़ते हैं और नया ग्रहण करते हैं। आधुनिक चकाचौंध से तो कोई भी अछूता नहीं रहा है। अत: पूर्व परम्परा में थोड़ा सुधार करते हुए इस सार्थक परामर्श को अवश्य ग्रहण करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द कहते हैं-''सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।''

वैचारिक मतभेद-अनेक मतमतान्तर, जाति-बिरादरी के सज्जन पण्डित द्वारा हवन से असहमत भी हो सकते हैं। उनसे विनम्र निवेदन है कि शवदाह के पूर्व के समस्त कार्यक्रम अपने विधि विधान अर्थात् अपनी परम्परा के अनुसार करें। परन्तु शवदाह के समय घी, सामग्री आदि पदार्थ अवश्य डालें। क्योंकि शरीर किसी का भी हो, जलाने पर दुर्गन्ध तो उत्पन्न होगी ही। अत: उसे दूर करने के लिए अग्नि में घी, सामग्री आदि पदार्थ डालना दोष पूर्ण नहीं। आप पण्डित नहीं चाहते तो न बुलाएं। ''ओ३म् नम: स्वाहा'' मन्त्र बोल कर ही आहुतियां दे सकते हैं। शवदाह हेतु अग्नि प्रज्वलित होने के बाद ही घी, सामग्री की आहुतियां डालें। पाठकों की प्रतिक्रिया सादर आमन्त्रित है।

जन जागरण हेतु विभिन्न संस्थाएं/उदारहृदय सज्जन बिना कोई परिवर्तन किए इसे प्रचारार्थ प्रकाशित कर सकते हैं।

thearyasamaj.org

वेद और धर्म

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला, देहरादून

संसार की अधिकांश जनसंख्या धर्म पारायण या धर्म को मानने वाली है। धर्म क्या है ? धर्म सत्य व असत्य के ज्ञान, असत्य को छोड़ने व सत्य को ग्रहण करने, उसका पालन, आचरण व धारण करने को कहते हैं। संसार के सभी धार्मिक ग्रन्थों में धर्म व सत्य पूर्ण रूप से विद्यमान नहीं है। इसके अतिरिक्त सभी ग्रन्थ कुछ सत्य व कुछ या अधिक भी मिश्रित है जिससे सत्य व असत्य का निर्णय सामान्य धर्मानुयायी के लिए सम्भव नहीं है। वह मत या मजहब तो कहला सकते हैं परन्तु धर्म तो शत-प्रतिशत जीवन में धारण करने योग्य गुणों को ही कहते हैं। क्या जीवन में असत्य को धारण करना चाहिए, इसका उत्तर कहीं से कोई भी हां में नहीं देगा। इसका कारण क्या है कि सबको ज्ञान है कि मनुष्य जीवन असत्य का आचरण करने के लिए वरन् सत्य का आचरण करने के लिए ही ईश्वर से मिला है। जब हम धर्म की बात करते हैं तो हमारे सामने ईश्वर का नाम व काम भी उपस्थित व विद्यमान होता है। हम स्वयं को बनाने वाली सत्ता को नहीं जानते या कुछ-कुछ ही जानते हैं। किसने व क्यों हमें बनाया है, यह ज्ञान संसार में बहुत कम लोगों को होगा। जो लोग इसका यह उत्तर देते हैं कि हमें भगवान ने बनाया है, उनका उत्तर तो ठीक है परन्तु यदि उनसे यह पूछे कि बताओ, भगवान कहां है ? कैसा है ? क्या करता है ? क्या भगवान को भी किसी ने बनाया है ? यदि नहीं बनाया है तो अपने आप कैसे बन गया ? यह सत्य है कि हमारा जन्म हमारे माता व पिता से हुआ है। माता के गर्भ में हमारे शरीर का निर्माण हुआ है। परन्तु यह भी सत्य है कि हमारे माता व पिता को भी हमारे शरीर को बनाने का किंचित भी ज्ञान नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि माता के गर्भ व पिता के शरीर के भीतर एक ऐसा तत्व व सत्ता विद्यमान है जो वहां रहकर माता के गर्भ में शिशुओं का निर्माण करती है। वह है, तभी तो हमारा शरीर माता के गर्भ में बना था और यदि बनाने वाला होता ही न तो फिर वह बनता भी नहीं। हमें आश्चर्य होता है कि आज भी बहुत से लोग संसार में है जो एक अज्ञानपूर्वक व बुद्धिहीन उत्तर देते हैं कि मनुष्य अपने आप स्वत: बिना ईश्वर या माता-पिता से भिन्न सत्ता के द्वारा बन जाता है। यदि हम उनसे एक उदाहरण मांगे तो बताओ कि संसार में ऐसी कौन सी वस्तु है जो बिना रचयिता या निर्माता के बनी है, तो वह निरूत्तर हो जाते हैं। यह तीन काल में भी संभव नहीं है कि मानव शरीर माता के गर्भ में अपने आप बन जाए।

मानव शरीर इस ब्रह्माण्ड की सर्वोत्तम रचना कही व मानी जाती है। क्या ऐसा हो सकता कि कोई सर्वोत्कृष्ट कार्य स्वत:, बिना रचयिता के हो जाए। यह असम्भव है। इतना ही नहीं, माता के गर्भ में उस सत्ता ने मनुष्य के शरीर को ही नहीं बनाया अपितु शरीर में एक सजीव, विचार व मननशील जीवात्मा को, जो कि ज्ञान व क्रियाएं को करने वाला एक चेतन तत्व है, उसे भी शरीर में प्रतिष्ठि किया है। हम संसार में दो प्रकार की रचनाएं देखते हैं। एक मनुष्यों द्वारा बनाई गई होती हैं तो दूसरी रचनाएं दिखाई तो देती हैं परन्तु उनके बनाने वाला दिखाई नहीं देता है। जो रचनाएं बनी तो हैं परन्तु जिनका बनाने वाला दिखाई नहीं देता और एक मनुष्य या सभी संसार के मनुष्य भी मिलकर जिसको बना नहीं सकते, तो उन्हें 'हम अपौरूषेय रचना कह सकते हैं जिसका अर्थ होगा कि यह रचना तो है परन्तु इसे मनुष्यों ने नहीं बनाया है। अब प्रश्न यह है कि इन अपौरूषेय रचनाओं यथा सूर्य, चन्द्र, पृथिवी व पृथिवीस्थ अग्नि, जल, वायु, आकाश आदि सभी पदार्थ किसने बनाए हैं ? इनका सरल उत्तर है कि यह उसने बनाए हैं जो इन्हें बना सकता है। अब, वह कौन है तो इसका उत्तर ऊहापोह करने से मिल जाता है। अपौरूषेय रचना करने वाला रचयिता सत्य, चेतन तत्व, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर-यामी, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर स्वाधीन, सर्वज्ञ, ऐसी सत्ता जिसने इससे पूर्व भी अनेकानेक बार इस प्रकार की अपौरूषेय रचनाएं की हों, वह हो सकता है। यही सत्य है और यही यथार्थ ईश्वर का वास्तविक स्वरूप भी है। इसी स्वरूप का सृष्टि के आदि ज्ञान, चार वेदों में उल्लेख है। वह ईश्वर कैसा है, इसका वेदों का गहन अध्ययन कर स्वामी दयानन्द ने संक्षेप में लिखा है कि "ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र व सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।" यह आर्य समाज का दूसरा नियम भी है। पहले नियम में भी ईश्वर सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल है। इतना जान लेने के बाद हम वेदों व वैदिक साहित्य का अध्ययन कर अपने ज्ञान का विस्तार कर सकते हैं। ऐसा जो ईश्वर है वह इस संसार का रचयिता भी है और मानव सहित सभी प्राणियों के शरीरों की रचना करता है। विकासवाद अथवा स्वयं हो जाने व बन जाने वाला सिद्धान्त दोष पूर्ण एवं मिथ्या है। अब आईए, कुछ चर्चा वेद और धर्म की भी कर लेते हैं। वेद संसार की सबसे प्राचीनतम् पुस्तकें हैं। पुस्तकों से पूर्व वेद श्रुति नाम व रूप में विद्यमान थे। श्रुति ऐसे ज्ञान को कहते हैं जिसे सुनकर अर्थात् श्रवण के द्वारा जाना, समझा व माना जाता है। इससे पूर्व इन चार वेदों का ज्ञान ईश्वर ने आदि चार ऋषि-अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा जिन्हें ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न किया था, उनकी आत्माओं में अपनी जीवस्थ स्वरूप या सर्वान्तरयामी स्वरूप से ज्ञान देकर इन्हें ज्ञान व शक्ति सम्पन्न किया था। आज भी हमें इसका कुछ-कुछ प्रमाण मिल जाता है। हम जब कोई अच्छा कार्य करते हैं तो हमारे हृदय के अन्दर निर्भयता, सुख, प्रसन्नता, आनन्द, उत्साह की अनुभूति होती है और जब कोई बुरा कार्य, चोरी आदि, करते हैं तो मन में भय, शंका, चिन्ता, दु:ख, लज्जा आदि की अनुभूति होती है। यह अनुभूति किससे व किसके द्वारा होती है ? इसका उत्तर है कि ईश्वर सर्वान्तरयामी होने से आत्मा के भीतर भी विद्यमान है और उसी के द्वारा यह अनुभूतियां कराई जाती हैं। इसी ईश्वर ने सृष्टि की आदि में चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान दिया था। इसके बाद इन ऋषियों से श्रवण द्वारा ज्ञान के प्रचार प्रसार, पठन-पाठन व Study की परम्परा चली।

वेदाध्ययन करने पर पता चलता है कि वेद वस्तुत: संसार का सर्वप्रथम सर्वांगपूर्ण सत्य व ज्ञान से परिपूर्ण धर्म का पुस्तक या ग्रन्थ है। वेदानुकूल मान्यताएं धर्म व इसके विरूद्ध मान्यताएं असत्य व अधर्म की संज्ञा को प्राप्त हैं। महाभारत काल तक यही वेद धर्म सारे संसार में प्रचलित व प्रतिष्ठित था। महाभारत युद्ध के बाद सारे संसार में अज्ञान का अन्धकार फैल गया जिस कारण लोगों ने वेदों को विस्मृत कर अपने अज्ञान के आधार पर सत्यासत मिश्रित ग्रन्थ बनाएं और उन्हें धर्मग्रन्थ के नाम से प्रतिष्ठित किया। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत की धरती पर महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने अपने अभूतपूर्व पुरूषार्थ से चारों वेद व उनके सत्य अर्थों की खोज कर उन्हें महाभारत व उससे पूर्ष की भांति प्रतिष्ठित कर दिया। वेदों का ज्ञान, प्रचार व प्रसार के लिए उन्होंने बोल-चाल की भाषा 'हिन्दी' में वैदिक सत्य मान्यताओं का धर्म ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" लिखकर प्रकाशित कर दिया जिससे वेदों की अप्रसिद्धि के काल में व उसके बाद उत्पन्न धर्माधर्म युक्त मजहबी ग्रन्थों से उत्पन्न अज्ञान व अन्धविश्वास, पाखण्डों व कुरीतियों का ज्ञान आम व्यक्ति तक को हो गया है। अत: अब वेद से इतर व वेद विरूद्ध ग्रन्थों को धर्म के नाम पर मानने व उनका आचरण व अनुसरण करने की आवश्यकता नहीं है। जिस प्रकार अज्ञानी व्यक्ति को किसी विषय का ज्ञान हो जाने पर वह अपनी अज्ञानतापूर्ण पूर्व मान्यता को छोड़कर ज्ञान व अनुभव से सिद्ध सत्य मान्यताओं का अनुसरण करता है, उसी प्रकार धर्म के क्षेत्र में भी संसार के सभी लोगों को अपनी भ्रान्त व संशयों से परिपूर्ण मान्यताओं को छोड़कर वेद की सत्य व ज्ञान पर आधारित मान्यताओं को स्वीकार करना चाहिए और उसे अपने जीवन में धारण कर व उन्हें आचरण में लाकर अपने जीवन को सफल व सार्थक सिद्ध करना चाहिए।

आज वस्तुत: वेद ही धर्माचरण की एक मात्र सत्य व ज्ञान से परिपूर्ण पुस्तकें हैं। जो इनको जानकर इनकी शिक्षाओं के अनुसार करेगा वही व्यक्ति धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है, अन्यथा, 'नान्य: पन्था विद्यते अयनाय:' की उक्ति की भांति उसका जीवन असफल होगा। सत्य के ग्रहण और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। आईए इन वैदिक मन्तव्यों व वाक्यों का मर्म जानकर इससे लाभ उठाएं और सत्य धर्म, जिसका आदि स्रोत वेद हैं और जो आज भी प्रासंगिक एवं अपरिहार्य हैं, का पालन कर जीवन को सफल बनाएं। एक सच्चे धार्मिक व्यक्ति में कैसे गुण होते हैं इसके लिए हम स्वामी दयानन्द के गुणों का स्मरण करते हैं। इन गुणों वाला व्यक्ति ही वस्तुत: देश, समाज के लिए उपयोगी होता है और ऐसे व्यक्ति का जीवन सफल होता है। वैदिक विद्वान श्री शिव शंकर शर्मा जी, काव्यतीर्थ के अनुसार महर्षि दयानन्द- "निर्भय, न्यायकर्त्ता, सर्वप्राणिहितकर, दीर्घदर्शी, समदृष्टि, पक्षपातरहित, प्रभावशाली, प्रतिभावान, महासमीक्षक, महासंशोधक, तेजस्वी, ब्रह्मवर्चसी, ब्रह्मवित्, ब्रह्मपरायण, बाल ब्रह्मचारी, उर्ध्वरेता, सुवक्ता, वाग्मी, जितेन्द्रिय, योगीराज, आचार्यों का आचार्य, गुरूओं का गुरू, पूज्यों का भी पूज्य, जगद्वन्द्य, प्रहसितवदन, प्रांशूबाहू, समुन्नतकाय, सदा आनन्द, निर्मल, निर्विकार, समुद्रवत्गम्भीर, पृथ्वी-वत्क्षमाशील, अग्निवत् देदीप्यमान्, पर्वतवत् कर्तव्यस्थिर, सद्गतिवायुक्त निरालस, रामवतलोकहितकारी, परशुरामवत् अन्याय संहारी, बृहस्पतिवत् वेदवक्ता, वसिष्ठवत् वेद प्रचारक, असत्य का परमद्वेषी, सत्य का परम पक्षपाति, आर्यावर्त्त के परम पिता (स्वामी दयानन्द) हैं।" महर्षि दयानन्द के सभी व अधिकांश गुण मर्यादा पुरूषोत्तम राम, योगेश्वर कृष्ण, धर्मराज युधिष्ठिर आदि सभी ऋषि मुनियों में विद्यमान रहे हैं। यह ऐसे महापुरूष थे जिन्होंने अपने जीवन व कार्यों से धर्म का साक्षात् उदाहरण प्रस्तुत किया है।

thearyasamaj.org

भगवद् गीता का एक मार्मिक श्लोक

-ले० भवानी लाल भारतीय 315 शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

गीता को हमारे शास्त्रकारों एवं विद्वानों ने उपनिषदों का सार कहा है। यह संवाद शैली में रचा गया है जहां कृष्ण वच्य एवं अर्जुन श्रोता या उपदेश ग्रहीता हैं। ग्यारहवें अध्याय को विश्व रूप दर्शन (आलंकारिक) कहा जाता है। यहां आते-आते अर्जुन को विश्वास हो गया, यों तो कृष्ण एक सामान्य मनुष्य थे किन्तु इस प्रसंग में व्याख्यात उनके सांख्य, योग, वेदान्त आदि के ज्ञान से यह पता चलता है कि वे साधारण मनुष्य नहीं किन्तु मानव जाति के शास्त्र तथा जगद् गुरू हैं इस प्रसंग में उसने निम्न श्लोक कहा-

सखेति मब्बा प्रसमं यदुक्तं हे कृष्णा हे यादव हे सखेति।

अजानता महिमानं तवेदं मद्य प्रमादात् प्रणयेन वाऽपि॥११।४

मैंने आपको अपना सखा मानकर कभी हे कृष्ण, हे यादव, हे सखा आदि शब्दों से सम्बोधित किया है। वस्तुत: आप एक सखा या यदुवंशी कृष्ण से भी बढ़कर हैं। सामान्य मानव में चिंतन, मनन, साधन से कहीं बढ़ कर हैं, अत: यदि मैंने आपको पुकारते समय कृष्ण, यदुवंशी यादव या हे मित्र, जैसे सम्बोधनों से सम्बोधित किया तो यह या तो पारस्परिक प्रेम के कारण या प्रमाद वश (असावधानी) हुआ। कृष्ण और अर्जुन के परस्पर सम्बन्ध हैं। पारिवारिक दृष्टि से वह कृष्ण के बहनोई हैं। अर्जुन की बहिन सुभद्रा से कृष्ण ने विवाह किया था। दोनों में परस्पर मैत्री भाव तो था ही, दोनों का अर्जुन कृष्ण को साथ लेकर कभी कृष्ण तो कभी उनके यदुवंशी होने के कारण यादव तथा कभी मात्र सखा कहकर पुकारता था। जैसे दो प्रगाढ़ मित्रों के बीच सहज स्नेह सम्बन्ध होने के कारण वे आपस में स्वेच्छाचार बरतते हैं।

परन्तु आज गीता को गूढ़ और योग, वेदान्त, सांख्य आदि पर्वतों पर आधारित व्यावहारिक दर्शन कृष्ण से सुन कर अर्जुन को विश्वास हुआ कि वे प्रथम श्रेणी के दार्शनिक कर्म मार्गी योगी तथा वैश्विक स्तर के उपदेशक हैं। अत: उसने एक प्रकार से क्षमा याचना करते हुए कहा कि मैंने जो आपको एक साधारण बंधु, मित्र तथा सखा की भांति ट्रीट किया, उसके दो ही कारण हैं-या तो यह मेरा प्रमाद (गफलत) है या आपसे अतिशय प्रेम है। अन्यथा आप तो एक महान् योगी और शास्ता (उपदेशक) की भांति वंदनीय है।

वार्षिक एथलैटिक्स मुकाबले सम्पन्न

बरनाला 15.11.14 को गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला में वार्षिक एथलैटिक्स मीट आज सम्पन्न हुई। सर्वप्रथम संस्था प्रबन्धक संजीव शोरी तथा महासचिव भारत मोदी द्वारा झण्डा लहराने की रस्म अदा की गई। मुख्याध्यापक राम कुमार सोबती ने आए अतिथियों का स्वागत किया। गायत्री मंत्र के साथ खेलों का शुभारम्भ किया गया।

प्रोग्राम के प्रोजैक्ट चेयरमैन चरणजीत शर्मा द्वारा विद्यार्थियों में एथलैटिकस मुकाबले करवाए गए। मुकाबलों में 50 मीटर, 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर दौड़ें, लम्बी छाल तथा शाटपुट फैंकने आदि प्रतियोगिता में यूनियर, सीनियर वर्ग में भाग लिया। सीनियर वर्ग लड़कों में देवेन्द्र कुमार, यूनियर वर्ग में हरजिन्द्र सिंह को बैस्ट एथलीट घोषित किया गया। सीनियर वर्ग लड़कियों में गायत्री तथा यूनियर वर्ग लड़कियों में अनुराधा व सिमरन को बैस्ट एथलीट घोषित किया गया।

विजयी विद्यार्थियों को शहर की समाज सेविका मीनाक्षी बांसल तथा सुनील बांसल द्वारा ईनाम वितरित किये गए। अपने भाषण में संजीव शोरी तथा मीनाक्षी बांसल ने सम्बोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार के मुकाबले अवश्य करवाने चाहिए जिससे बच्चों का स्वास्थ्य ठीक रहता है। रूचि खेलों के प्रति बढ़ती है तथा वे नशे आदि से दूर रहते हैं। राष्ट्रगान के साथ खेलें सम्पन्न हुईं। मंच संचालन राजमहेन्द्र सिंह ने किया। खेल प्रतियोगिता में कमलेश रानी, सुमन जिन्दल, रीटा रानी, मीनाक्षी जोशी, निर्मला देवी, नवीना रानी, प्रमोद कुमार, वीरेन्द्र कुमार, प्रवीण कुमार तथा अन्य अध्यापकों ने पूरा सहयोग दिया।

-रामकुमार सोबती प्रिंसीपल

जालन्धर आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर का 128वां वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर का 128वां वार्षिकोत्सव दिनांक 17 नवम्बर से 23 नवम्बर 2014 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। 17 नवम्बर से 22 नवम्बर तक प्रातः 7.30 से 9.15 बजे स्वास्ति याग के मन्त्रों से यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा आर्य जगत के विद्वान् आचार्य राजू जी वैज्ञानिक थे। बहुत से परिवारों ने यजमान बनकर यज्ञ में आहुतियां डाली तथा पुण्य लाभ प्राप्त किया। रात्रिकालीन सत्संग में 7.45 से 9.00 बजे तक श्री राजेश प्रेमी के भजन तथा आचार्य राजू वैज्ञानिक जी के प्रवचन हुए। मुख्य कार्यक्रम 23 नवम्बर 2014 रविवार को हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ 8.00 बजे हवन यज्ञ से हुआ। स्वास्ति याग के मन्त्रों की पूर्णाहुति के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री सोहन लाल सेठ परिवार ने मुख्य यजमान बनकर यज्ञ में आहुतियां डालीं। आचार्य राजू वैज्ञानिक जी सभी सप्ताह भर बनने वाले यजमानों को आशीर्वाद दिया। यज्ञ के पश्चात ध्वजारोहण माता राजरत्ती जी के करकमलों द्वारा किया गया। आर्य समाज के सभी सदस्यों के द्वारा माता राजरत्ती जी का हार्दिक अभिनन्दन किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात मुख्य आर्य सम्मेलन शुरू हुआ। श्री राजेश प्रेमी जी के भजनों द्वारा यह कार्यक्रम शुरू हुआ। तत्पश्चात वयोवृद्ध विद्वान् श्री वेद प्रकाश जी आर्य द्वारा प्रभावशाली उद्‌बोधन हुआ। उन्होंने अपनी संस्कृति और सभ्यता को अपनाने पर जोर दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से आए श्री सुरेश शास्त्री जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हम आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बने और श्रेष्ठ बनने के लिए उन्होंने स्वाध्याय, सत्संग और संध्या प्रार्थना पर बल दिया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आचार्य राजू वैज्ञानिक जी ने सत्संग की महिमा पर बल दिया और कहा कि हमें कैसे लोगों का सत्संग करना चाहिए। श्रेष्ठ लोगों के संग से हमारे जीवन का निर्माण होता है इसके लिए उन्होंने अपने महापुरूषों के जीवन के उदाहरण दिए। अंत में आर्य समाज के प्रेरणास्रोत तथा मार्गदर्शक श्री सोहन लाल सेठ जी ने सभी विद्वानों, अतिथियों का धन्यवाद किया। मंच का संचालन लभ्भू राम दोआबा स्कूल के प्राचार्य श्री श्रवण भारद्वाज जी ने कुशलतापूर्वक किया। आर्य समाज की प्रभन्धकर्तृ सभा के प्रधान श्री विनोद सेठ जी की कर्मठता से यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ तथा ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

-विनोद सेठ प्रधान आर्य समाज

वैदिक विचार गोष्ठी का आयोजन

आर्य समाज फाजिल्का एवं वैदिक शिक्षा परिषद् फाजिल्का के तत्त्वावधान में 9 नवम्बर, 2014 को सायं चार बजे डॉ० रणवीर प्रताप असीजा प्रिंसीपल महर्षि दयानन्द कॉलेज आफ एजूकेशन अबोहर की अध्यक्षता में ''वैदिक विचार गोष्ठी'' का आयोजन किया गया जिसमें अन्त्येष्टि संस्कार ''शव पर अधिक संख्या में चद्दरें चढ़ाए जाने का औचित्य एवं वैकल्पिक व्यवस्था'' विषय पर मुख्यत: विचार किया गया। एतत् सम्बन्धी गौण विषयों पर भी चर्चा हुई।

इस अवसर पर सभी स्थानीय शिक्षण संस्थाओं, मन्दिर, गुरूद्वारा, सामाजिक, धार्मिक, विभिन्न जाति-बिरादरी से सम्बन्धित समाज, सभा, संस्थाओं, महिला संगठन, परिषदों, अन्य प्रमुख समाज सेवी संगठनों के पदाधिकारी एवं सदस्यगण तथा नगर के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण गणमान्य व्यक्ति आमन्त्रित थे।

इनमें जिन महानुभावों ने अपने महत्त्वपूर्ण विचार व्यक्त किए उनके नाम उल्लेखनीय हैं-श्रीमती सुदेश नागपाल, प्रेम नारायण धर्मशिक्षक, राम स्वरूप शर्मा प्राचार्य, प्रदीप अरोड़ा प्रिंसीपल, जगदीश सेतिया प्रधान शिवपुरी प्रबन्धक समिति, श्रीमती मीना शर्मा, श्री सतीश सेतिया, डॉ० सुशील वर्मा संरक्षक आर्य समाज इन सभी वक्ताओं का एक ही मत था कि अधिक संख्या में चद्दरें चढ़ाने में कोई औचित्य नहीं। चद्दरें चढ़ाने वाले सज्जन इनके स्थान पर घी, हवन सामग्री के पैकेट चढ़ाएं। चन्दन, गरीगोला आदि भी दे सकते हैं। यही उपयुक्त एवं श्रेयस्कर है। विचार गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ० रणवीर प्रताप असीजा ने सभी वक्ताओं के विचारों का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। विचारगोष्ठी के संयोजक वेद प्रकाश शास्त्री ने मंच संचालन किया। अन्त में आर्य समाज के प्रधान डॉ० नवदीप जसूजा ने उपस्थित सभी महानुभावों एवं अध्यक्ष के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर स्त्री आर्य समाज की प्रधाना सुनीता मिड्ढा, कृष्णा कुक्कड़ एवं अन्य सदस्याएं तथा किशोर चन्द पुंछी, डॉ० सिम्मी जसूजा, डॉ० कृष्ण लाल चावला, सुभाष थिरानी, देसराज धूड़िया एवं अन्य अनेक सज्जन उपस्थित थे।

-वेद प्रकाश शास्त्री संयोजक

theryasamaj.org

प्रो. उमाकान्त उपाध्याय का महाप्रयाण : एक महती क्षति

दूरभाष से कोलकता के श्री चांद रतन जी ने उपाध्याय के निधन का दुखद समाचार दिया। उपाध्याय जी से मेरे आधी सदी से अधिक का सम्पर्क और स्नेह सम्बन्ध रहा। वे उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर ज़िले के एक संस्कारी ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे। वैदिक कर्मकाण्ड के प्रति उनका पारिवारिक आकर्षण रहा। आगे चल कर कोलकाता आर्य समाज के वार्षिक अधिवेशनों पर उन्होंने कई दशकों तक आचार्यत्व का दायित्वपूर्ण कार्य संभाला और अपने ही मार्गदर्शन में पंडित आत्मानन्द, पंडित नचिकेता आदि कई नवीन कर्मकाण्डी पण्डितों को प्रशिक्षित किया। यों तो वे अर्थशास्त्र के प्राध्यापक थे किन्तु वेद, संस्कृत तथा शास्त्रों में उनकी गहरी गति थी। उन्होंने वेद मंत्रों के जैसे लोकोपयोगी अर्थ किए हैं, उनसे वैदिक स्वाध्याय में लोगों की रूचि बढ़ी है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त का भाष्य इसी कोटि की रचना है।

वेदाध्ययन और लेखन में प्रवृत्त होने के अलावा उन्होंने बंगाल में आर्य समाज की गतिविधियों और विकास को लक्ष्य बना कर कोलकाता आर्य समाज का इतिहास, आर्य समाज के विद्वान और शास्त्रार्थ आदि अनेक शोधपरक ग्रन्थ लिखे हैं। सत्यार्थ प्रकाश दर्पण सत्यार्थ प्रकाश जानकारियों का विश्व कोश ही है।

उपाध्याय जी बहुभाषा विद थे। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और बंगाली में उनकी निर्बाध गति थी। उन्होंने अनेक बंगाली ग्रन्थ भी लिखे हैं। निरन्तर आधी शताब्दी तक कलकत्ता आर्य समाज के मासिक पत्र आर्य संसार का सम्पादित कर उन्होंने आर्य पत्रकार जगत में एक मानदण्ड स्थापित किया है। लेखन के साथ उपाध्याय जी ने वाणी द्वारा भी वैदिक धर्म का भूमण्डल स्तर पर प्रचार किया था। मेरे उनके साथ निजी सम्बन्ध थे। यदा कदा सम्मेलन समारोहों तथा कलकत्ता के कार्यक्रमों में उनसे भेंट तथा विचार परिवर्तन के अवसर आते थे। मेरा अमृत महोत्सव जब श्री गंगानगर में आयोजित किया गया तो उपाध्याय जी को अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया गया जिसकी भौगोलिक दूरी कम नहीं है और यह लम्बी यात्रा काफी कष्टप्रद होती है। एक सात्विक, समर्पित तथा सुशिक्षित विद्वान का आर्य बौद्धिक जगत से विदाई लेना एक महती तथा अपूरणीय क्षति है। वे मुझ से बड़े और स्वर्ग का रास्ता भी उन्होंने पहले ही अन्वेषित किया। आगे की पंक्ति में अब हमारा नाम है। उपाध्याय जी का सारा परिवार आर्य समाजी था। बड़े भाई रमाकान्त अनुज श्रीकान्त उपाध्याय तथा भतीजे डा. वाचस्पति उपाध्याय उनके परिवार के रत्न थे। -डा. भवानी लाल भारतीय

भजन सन्ध्या बड़ी धूमधाम से सम्पन्न

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान पूज्य आचार्य देवराज (मुम्बं वाले) द्वारा संचालित वैदिक सत्संग परिवार पंजाब द्वारा आयोजित भजन सन्ध्या रेल डिब्बा कारखाना कपूरथला के सुपरवाईजर क्लब में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुई जिसमें पूज्य आचार्य नचिकेत दर्शनाचार्य (मुम्बई) व पूज्य आचार्य दिवाकर भारती (मोगा ज्ञानवर्षा व आशीर्वाद प्रदान किया और कहा परमात्मा की कृपा तो सदैव सब पर सदा रहती है। हम में पात्रता होनी चाहिए सुपात्र बन कर हम उसकी कृपा के पात्र बनें। मुम्बई से पधारी आर्य बहिन पूज्या आचार्य संगीता जी ने व सरदार सुरेन्द्र सिंह, गुलशन, अरूण शुक्ला (जालन्धर) एवं श्री नरेन्द्र कुमार सूद जी. पी. शर्मा कपूरथला ने अपने मधुर भजनों से सभी का मन मोह लिया। मुख्य अतिथि ने स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत एवं उन्नत समाज बनाने पर विशेष बल दिया तथा विभिन्न सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को सम्मानित किया। सनातन धर्म सभा गायत्री परिवार साई भजन सन्ध्या समिति रामशरण आर्य समाज आदि विभिन्न संस्थाओं का भरपूर सहयोग रहा। अन्त में प्रबन्धक समिति ने सभी का धन्यवाद किया।

-नरेन्द्र सूद प्रचार मंत्री

फिरोज़पुर में विश्व शान्ति महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर गुरूकुल विभाग फिरोजपुर शहर में 7 नवम्बर से 9 नवम्बर तक विश्व शान्ति महायज्ञ हुआ जिसे वार्षिक उत्सव के रूप में मनाया गया। इस महायज्ञ के यज्ञ पुरोहित पंडित सुनील शास्त्री रहे। उन्होंने चौबीस यजमानों को तीन दिन में वैदिक रीति से आहुति दिलाई। मुख्य यजमान के रूप में श्री वेद प्रकाश बजाज अपनी धर्मपत्नी के साथ बैठे। प्रवक्ता के रूप में होशंगाबाद से आए आचार्य राजेन्द्र याज्ञिक जी थे। उन्होंने इस महायज्ञ में भाग लेने वालों को तथा यजमानों को सौभाग्यशाली बताते हुए कहा कि यज्ञ हम पंजाब की धरती, शहीदों की धरती फिरोजपुर में कर रहे हैं परन्तु इसका लाभ समस्त विश्व को रहा है हमें ऐसे ही काम करने चाहिए जिससे विश्व को लाभ पहुंचे। प्रथम दिन उन्होंने सुख दुख के बारे में विस्तार से व्याख्या की तथा बताया कि हम सिर्फ दुःख में ही ईश्वर की उपासना करते हैं जबकि सुख में भी हमें ईश्वर को याद करना चाहिए। उन्होंने वेदों के बारे में बताते हुए कहा कि वेद सबसे पुराने ग्रन्थ हैं। इन्हें पढ़कर आपको ज्ञान होगा कि हमें किस तरह जीना है और क्या करना है, किस तरह दूसरों की भी भलाई करनी है। दूसरों की भलाई करना ईश्वर को पाना है।

दूसरे दिन मां शब्द की महिमा के बारे में बताया। मां शब्द का अर्थ क्या है ? मां किसे कहते है ? मां चीज़ क्या है ? उन्होंने कहा आज वृद्ध आश्रम भरे पड़े हैं। हम अपने बड़ों की सेवा की ओर ध्यान नहीं देते। जिन्होंने खुद कष्ट काटकर हमें बड़ा किया पाला-पोसा। उन्होंने मां का उदाहरण देते हुए कहा कि नौ महीने मां बच्चे को पेट में पालती है खुद हजारों कष्ट सहन करती है परन्तु बेटा बड़ा होकर उसकी और ध्यान देना तो क्या, उन्हें घर से बाहर निकाल रहा है। बहुत कम ऐसे बच्चे है, जो मां-बाप की सेवा कर रहे हैं। उन्होंने अपने शब्दों में कहा मां-बाप की सेवा करना भगवान के दर्शन करना बराबर है। इसलिए हमें इनकी सेवा में लगे रहना चाहिए।

अन्तिम दिन याज्ञिक जी ने आयुर्वेद पर ज्यादा जोर दिया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद में ऐसे सरल उपाय है जिससे बड़ी से बड़ी बिमारी दूर होती है। उन्होंने अपने शिष्य का उदाहरण देते हुए बताया कि कैंसर जैसी बिमारी को आयुर्वेद से ठीक किया है जिन्हें एलोपेथिक डाक्टर ने जवाब दिया था। उन्होंने अनेकों बिमारियों के ईलाज का दावा किया। उन्होंने हवन रोजाना अपने घर करने का भी लोगों को विश्वास में लिया तथा समझाया कि प्रतिदिन अपने घर में यज्ञ करें तथा मैं गारन्टी साथ कहता हूं, पहले तो बिमारी आपके पास नहीं आएगी। दूसरा आपकी हर मनोकामना ईश्वर पूरी करेंगे। इस महायज्ञ में बहुत से सदस्यों ने भाग लिया जिसमें फिरोजपुर वेल्फेयर सोसाईटी के सदस्य, भारत विकास परिषद के सदस्य, पंडित सतीश शर्मा एडवोकेट, डा. विनोद मेहता, डा. महेश मारकन, डा. सुदेश गोयल, श्रीमती किरण मल्होत्रा, श्रीमती बजाज, माता मय्यिा तथा राज छाबड़ा जी इत्यादि ने भाग लिया। विशेष रूप से फरीदकोट आर्य समाज मन्दिर के 15 सदस्य भी इस महायज्ञ की पूर्णाहुति में पधारे।

अन्त में श्री नरेश मल्होत्रा प्रधान आर्य समाज मन्दिर ने सभी का धन्यवाद किया तथा 100 वर्ष पुरानी आर्य समाज मन्दिर के खण्डर भवन के निर्माण के लिए लोगों को सहयोग देने की अपील भी की। सभी को लंगर भी खिलाया गया। -विपन धवन

thearyasamaj.org

वेदवाणी

करुणासागर! द्वेष की ज्वाला बुझा दें

प्राग्नये वाचमीरय वृषभाय क्षितीनाम्।
स नः पर्षदति द्विषः॥
-ऋ० १०।१८७।१, अथर्व० ६।३४।१

विनय-हे मनुष्य! क्या तू चाहता है कि अब तू द्वेष से पार हो जाए ? क्या तू अपने मनुष्य भाईयों से द्वेष कर करके और बदले में उनके द्वेष को पा-पाकर तंग आ चुका है ? तूने अपने सुख में बाधक समझ न जाने कितनों से द्वेष किया है, पर जितना ही तूने उनसे द्वेष किया है-वैर का बदला वैर से दिया है-क्या उतना ही वह द्वेष बढ़ता नहीं गया है ? ओह! इस बदले की, प्रतिद्वेष की प्रक्रिया से द्वेष इतना बढ़ता गया है कि तू आज अपने ही बनाए एक द्वेष-सागर में घिर गया है। यदि तू अब पूरा व्याकुल हो चुका है और चाहता है इस द्वेष-चक्र से पार हो जाए तो तू उठ और जगत् में व्यापक अपने उस अग्निदेव तक अपनी वाणी को पहुंचा, जो सब मनुष्यों की कामनाओं को पूरा करने वाला है। अरे, वह तो 'वृषभ' है, हम पर करुणा करके अभीष्टों को बरसा रहा है। केवल उस तक अपनी आवाज़ पहुंचाने की देर है कि वह तेरी कामना पूरी कर देगा। यदि तेरी यह इच्छा हार्दिक है तो निश्चय ही तेरी प्रार्थना, तेरी पुकार, वेग से, प्रकृष्टता से वहां पहुंचेगी। यदि वाणी की प्रकृष्टता से प्रेरित करने का हममें सामर्थ्य हो तो प्रार्थना की वाणी उस अग्निदेव को पहुंचकर उससे क्या नहीं करा सकती, किस कामना की पूर्ति नहीं कर सकती। हमारी कामना को पूरा करने की सामर्थ्य उसी में है-केवल उसी में है। वही हमें द्वेष-सागर से पार करेगा। इसलिए तू अपने सुख में बाधक समझकर अब किसी से द्वेष न कर, किन्तु सुख के बरसाने वाले उस प्रभु से प्रार्थना कर और फिर देख कि द्वेष कहां है ? प्रार्थना द्वारा उस प्रभु के सम्मुख पहुंचते ही सब द्वेष समाप्त हो जाएगा।

साभार-वैदिक विनय

बाल दिवस मेला आयोजित

आर्य गर्ल्ज सी. सैकेण्डरी स्कूल में 'बाल दिवस' मेला लगाया गया। बच्चों द्वारा रंगारंग प्रोग्राम पेश किया गया जिसमें छोटे बच्चे चाचा नेहरू बने और प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चलाए गए 'स्वच्छ भारत अभियान' की झांकी प्रस्तुत की गई। अध्यापिका श्रीमती अनीता सयाल और श्रीमती नीलम चावला ने बच्चों की ऐथलैटिक्स मीटिंग करवाई जिसमें मेंढक दौड़, लैमन दौड़, सुई धागा, रस्सी कूदना, तीन टांगों पर दौड़, बोरी दौड़ आदि करवाई। सभी अध्यापिकाओं ने मिलकर बच्चों के सहयोग से खाने-पीने की स्टालें लगवाईं। जिसका बच्चों ने खूब आनन्द उठाया।

आर्य स्कूल के मैनेजर श्री निहाल चन्द सचदेवा, कमेटी मैंबर, श्री अनिल अग्रवाल अपने परिवार सहित इस समारोह में शामिल हुए। उन्होंने बच्चों को बाल-दिवस पर अपनी शुभकामनाएं दीं। प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता ने बाल दिवस पर बच्चों को बधाई देते हुए कहा कि नेहरू जी हमारे देश के पहले प्रधानमन्त्री थे। वे बच्चों से प्यार करते थे। उन्होंने कहा बच्चे देश का भविष्य है। उन्होंने अपना जन्मदिन बच्चों के नाम पर अर्पित कर दिया। इसलिए उनका जन्मदिन बाल-दिवस के रूप में मनाया जाता है। अन्त में सभी बच्चों को श्री अनिल अग्रवाल जी की तरफ से चाकलेट बांटे गए और खुशी का माहौल बना रहा। प्रोग्राम का आगाज गायत्री मंत्र से किया गया और समाप्ति शान्ति पाठ से की गई।

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्वयनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com

आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।